स्मृति शेष.... मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन्

सर्वेभावा विनष्यन्ति भुवनत्रय वर्तिमा ।
अतुला केवला कीर्ति नरस्याहो न नश्यति ।।

जगत में समस्त वस्तुएं नश्वर हैं परन्तु एक अतुल कीर्ति ही नश्वर नहीं है। वह अमर है सो अमरत्व दे जाती है। मेरा आशय यहाँ मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज से है। निस्पृह योगी, क्षमा की मूर्ति, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, दिगम्बर श्रमण, पूज्य मुनिश्री 108 क्षमासागरजी महाराज का चेहरा बिम्बित होता है।

सागर के नामवर श्रेष्ठी जीवनकुमार सिंघईजी और उनकी धर्मपत्नी आशादेवी को 20 सितम्बर 1957 को पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। सिंघई परिवार का समर्पण वर्णीजी के प्रति बहुत था । मोराजी का पाषाण निर्मित मानस्तंभ इसी परिवार का सुकृत्य है। बालक को लेकर सभी महावीरजी गये, वहीं मुंडन कराया, आश्रम की संचालिका दानवीर कृष्णाबाईजी ने बालक का नाम वीरेन्द्र रखा । पढ़ने में सर्वोच्च स्थान, सर्वोत्तम अंक प्राप्त करने वाले वीरेन्द्र में नेतृत्व क्षमता अदभुत थी जिससे बात करते उसे अपना बना लेते। कठिन से कठिन गणित के सवालों को मिनटों में हल कर लेते और सरल शैली में अपने सहपाठियों को समझा देते ।

वीरेन्द्र ने एकलव्य की गुरुभक्ति का उदाहरण दिया, माता पिता जन्म देते है और गुरु हमें लौकिक शिक्षा और संस्कार देकर जीवन जीना सीखाते है उन गुरुओं के प्रति हमारा समर्पण होना चाहिए । बचपन से ही दान और सेवा की भावनाये उनके मन में संवर चुकी थी । वीरेन्द्र ने विश्वविद्यालय सागर में प्रवेश लिया । लौकिक शिक्षा के साथ साथ वीरेन्द्र को साहित्य पढ़ना अच्छा लगता था उन्हें मुंशी प्रेमचंद, विनोबाभावे, महात्मा गांधी की आत्मकथा कई बार पढ़ी। परीक्षा के दिनों में भी ध्यान, मंदिर में पूजन, अभिषेक आदि नित्यकाम कभी नहीं छूटे । देव, शास्त्र, गुरु के प्रति उनकी लगन देखकर माँ प्रसन्न हो गयी, एक एक पल का सदुपयोग करते । धार्मिक पाठशाला में भी पढ़ाने जाते थे ।

घर के सभी सदस्य एक बार आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शन के लिए गये, तब आचार्यश्री सामायिक पर बैठे थे, सो वीरेन्द्र खिड़की में से उन्हें अपलक निहारते रहे वीतराग मुद्रा को ध्यान की मुद्रा में साक्षात तीर्थंकर लग रहे थे । आचार्यश्री के दर्शन के बाद से वीरेन्द्र काफी बदल गये थे, चिंतन बढ़ गया था। एमटेक की पढ़ाई का आखरी सेमेस्टर था। निरंतर आचार्यश्री का चिंतन चल रहा था। एमटेक की पढ़ाई पूरी कर पहुँच गये नैनागिर जहां उनकी क्षुल्लक दीक्षा हुई (16 जनवरी 1980) ब्रह्मचारी वीरेन्द्र बन गये, क्षुल्लक क्षमासागरजी मुक्तागिरी (7 नवम्बर 1980 ऐलक दीक्षा), मुनि दीक्षा (नैनागिरी 20 अगस्त 1982) दीक्षा के पश्चात ही मुनिश्री की मौन साधना शुरु हुई 6 माह तक मौन साधना चलती रही ।

गुरु के सानिध्य में अपने विचार व्यक्त करना थे मुनिश्री के मुख से (जो विद्यादिसागर सुधी मंगलाचरण और मेरी भावना की ये पंक्ति ''मैत्री भाव जगत में मेरा सब जीवों से नित्य रहे,'' एक एक शब्द मानो हृदय से निकल रहा था, श्रोता खो गये इन मधुर वचनों में । मुनिश्री की आवाज में इतनी मधुरता थी जिसने भी एक बार सुना वह उनका हो गया । मुनिश्रीजी के प्रवचन की शैली बहुत ही सरल किन्तु प्रभावक भाषा में थी जनसाधारण के कल्याण को ध्यान में रखकर प्रवचन दिये जाते थे, उनके प्रवचनों की विशेषता है कि वे प्रकृति और लोक जीवन पर आधारित होते थे, साधारण सी दिखने वाली घटनाओं को अध्यात्म से जोड़कर विषय को इतना स्पष्ट और सरल बना देते थे कि वे श्रोताओं के मन पर एक गहरी छाप छोड़ देते थे । उनके निश्छल व्यक्तित्व, ज्ञान, ध्यान, तप, चिंतन और लोककल्याण की भावना का परिणाम है कि लोग देश-विदेश में रहकर भी उनके चरणों में नतमस्तक हैं।

बिगत 25 वर्षों से ज्यादा समय तक मुनिश्री की अमृतवाणी जन जन तक पहुंची, मुनिश्री ने धर्म का रुप ही परिवर्तित कर दिया। परिवार, कर्त्तव्य बोध, कर्म कैसे करे, दशलक्षण धर्म सभी विषयों को बहुत ही सरलता से जनमानस में उतार दिया ।

मुनिश्री को बच्चों से बहुत प्यार था । आहारचर्या में सबसे ज्यादा भीड़ बच्चों की होती थी । मुनिश्री ने महसूस किया हमारे समाज में प्रतिभाये साधनों के अभाव में कुंठित हो जाती हैं। उन्हें लगा कि एक वर्ग जो निरपेक्ष भाव से उन छात्रों का आलम्बन दे सकता है, अच्छे काम का साथ सभी देते है मुनिश्री की भावना साकार हुई ''मैत्री समूह'' के रुप में बंध गये ।

''मैत्री समूह'' के माध्यम से पहली बार ''यंग जैन अवार्ड'' का कार्यक्रम शिवपुरी मे हुआ । महाराजश्री के कुशल निर्देशन ने युवा वर्ग में स्फूर्ति भर दी । कार्यक्रम में आर्थिक अभाव से ग्रसित छात्रों को आर्थिक संबल मिला। मुनिश्री ने कहा ''जब तुम स्वावलम्बी हो जाओ तब यही राशि किसी दूसरे छात्र को प्रदान करना ताकि ज्ञान दान का यज्ञ चलता रहे, वर्षों तक युगों युगो तक'' । मैं स्वयं भी जयपुर यंग जैन अवार्ड में शामिल हुई, महाराजजी ने बच्चों के लिए तीन सूत्र दिये - थिंक पॉजीटिव, स्पीक स्वीट, इंगेज इन कन्स्ट्रक्टीव एक्टीविटीज।

लोग उनकी चर्या से समय का अंदाज लगाते थे घड़ी की सुई धोखा दे जाये पर मुनिश्री की व्यवस्थित चर्या का एक एक घटक समय सीमा से बंधा होता था।

1996 में मुनिश्री का इन्दौर में चातुर्मास हुआ । इन्दौर के समवशरण मंदिर में रविवार के दिन सुबह 9 से 10 के बीच ऐसा लगता था मानो साक्षात समवशरण ही लगा हुआ है, बच्चे, युवा, बूढ़े सभी शांतभाव से अपने अनसुलझे प्रश्नों का समाधान पा जाते थे ।

यहां जितने भी कार्यक्रम हुए सभी राष्ट्रीय स्तर की छवि लेकर सामने आये । काव्य की एक पुस्तक मुनिवर के नाम से जानी जाती है । (मुनि क्षमासागरजी की कविताएं) यहां प्रकाशित हुई ।

सन् 2006, गुना से 35 किलोमीटर दूर आरोन में चातुर्मास की स्थापना हुई, यहीं से महाराजश्री अस्वस्थ होने लगे । उनकी मधुर आवाज जो जन जन का कल्याण करती थी रुंधने लगी। निरंतर कमजोरी बढ़ने लगी लेकिन चर्या के प्रति इतनी दृढ़ता चाहे प्राण चले जाये आगम अनुसार चलना है, गुरु के प्रति इतना समर्पण का भाव ऐसा कहीं देखने को नहीं मिलता ।

मुनिश्री का स्वास्थ्य दिनों दिन गिरता गया और चर्या उतनी ही दृढ़ होती गयी । 13 मार्च 2015 को मुनिश्री ने समाधि के साथ अपनी अंतिम यात्रा पूर्ण की । लाखो श्रद्धालुओं की आंखो से आंसू रुक नहीं रहे थे, अंतिम विदाई देने लाखों की संख्या में लोग सागर पहुंचे और करीब दोपहर 12 बे उनका शरीर पंचतत्वों में विलीन हो गया ।

जैसे महावीर की वाणी अमर है वैसी ही मुनिश्री की वाणी अमर रहेगी । जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है उसे पूरा करना मुश्किल है। पूज्य मुनिश्री का जीवन क्रांति का श्लोक है मुक्ति का दिव्यछंद है और मानवीय मूल्यों की वंदना है, गुरुवर आप वीतराग साधना के पथिक, निरामय, निर्ग्रंथ दर्शन, ज्ञान चारित्र की त्रिवेणी है । आपको परोक्ष रुप से मेरा शत शत नमन ।

मुनिश्री क्षमासागरजी महाराज की स्वरचित पंक्तियां...

दर्पण तोड़ने से पहले इतना जरुर देख लेना, कहीं दर्पण में बना तुम्हारा प्रतिबिम्ब टूट न जाये।
उसने कुछ नहीं जोड़ा लोग बताते हैं, पहनने का एक जोड़ा भी,
उसके पास नहीं मिला, जिंदगी भर अपना सब देता रहा,
दे देकर सबको जोड़ता रहा ।

श्रीमती कल्पना इंजी. आनंदकुमार जैन, इन्दौर

अमेरिका में जैन परिवार द्वारा महावीर जयंती बड़े धूमधाम से मनाई गई । बच्चों द्वारा आकर्षक नृत्य नाटिका प्रस्तुत की गई ।

कानपुर में नवीन मंदिर हेतु भूमि शुद्धि एवं भूमि पूजन संपन्न

कानपुर के सीसामऊ क्षेत्र में नवीन जिनालय की भूमि शुद्धि एवं भूमि पूजन विधि हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुई । मंदिर मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराज के परम आशीर्वाद व निर्देशन में बन रहा है । शिलान्यास प्रतिष्ठा प्रदीप जैन 'सुयश' व मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज के सानिध्य में इसी माह होने की संभावना है ।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने है, सम्पादक मण्डल का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है । किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा ।

स्वामी श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास के लिए प्रकाशक, मुद्रक बाहुबली जैन द्वारा प्रकाशित प्रतीक्षा ग्राफिक्स127, देवी अहिल्या मार्ग इन्दौर से मुद्रित एवं ग्राफिक्स जोन कम्प्यूटर एंड ग्राफिक्स 356, तिलक नगर श्री गोलालारीय दि. जैन समाज न्यास, 64, न्यू देवास रोड, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित